Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 4, October 2023; Pages 28 – 30
DOI: 10.5281/zenodo.8328979
Original Research Article

# मराठवाडा मुक्ती संग्राम संघर्ष और महिला सैनिकों का सहभाग

प्रा. सौ. संगीता सदानंद स्वामी

श्री शिवाजी ज्युनियर कॉलेज, माणिकनगर, नांदेड

*Corresponding author E-mail*: sangitaswami507@gmail.com

Received: 29 August, 2023 | Accepted: 11 September, 2023 | Published: 13 September, 2023

**बीज शब्द:** मराठवाडा मुक्ती संग्राम, महिला सैनिक, हैदराबाद रियासत, निजाम, इंग्रज, रजाकार

हैदराबाद रियासत यह निजाम द्वारा शासित थी। यह अत्यंत क्रूर शासन पद्धती चलाने वाला शासक था। उन्होंने ब्रिटिश संप्रभु की सर्वोच्छता को स्वीकार किया था। ब्रिटिश सरकारने भारत को १५ ऑगस्ट १९४६ को स्वातंत्र्य किया। भारत के ५६२ रियासत जिनमेसे जुनागड के नवाब और काश्मीर के रियासत की तरह हैदराबाद निजाम रियासत भी भारत की आझादी के समय यांनी १५ ऑगस्ट १९४७ से पूर्व भारत में शामिल नही हुए थे। यहा के शासक मिर उस्मान अली खाँ हैदराबाद संस्थान के आसफिया घरांना भारत पर राज्य करने वाला सबसे अधिक काळ का संस्थान था। वह अपने रियासत को पाकिस्तान मे विलीन करने की पुरी तैयारी कर रहा था। पाकिस्तान के नेताओं एवं मुस्लिम मूल के नेताओं द्वारा एक स्वतंत्र शक्ती के रूप मे अपना अस्तित्व बनाये रखने को और भारत के एकीकरण का विरोध करने के लिए, अपने सशस्त्र बलों मे सुधार करने को प्रोत्साहित किया गया था। इस सैन्य सुधार के दौरान हैदराबाद राज्य मे आंतरिक अराजकता का उदय हुआ था। जिसके कारण १३ सितंबर १९४८ को भारतीय सेना को "ऑपरेशन पोलो" (हैदराबाद को स्वतंत्र भारत के संघ मे शामिल करने के लिए स्वतंत्र भारतीय सैन्य का अभियान) के तहत हैदराबाद भेजा गया था, क्योंकी हैदराबाद मे कानून व्यवस्था की स्थिती ने दक्षिण भारत की शांति के लिए खतरा पैदा कर दिया था।

सैनिको को रजाकारों (एकीकरण का विरोध करने वाली निजी मिलिटरी) का सामना करना पडा और १३ से १८ सितंबर के मध्य सेना ने राज्य पर पूर्ण नियंत्रण कर दिया। ऑपरेशन के कारण बडे पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा हुई, जिसमे हजारो लोगो की मौते हुई, हजारो की संख्या मे गाव जलकर राख कर दिये गये थे। इसी प्रकार अगणित परिवार बेघर हुए थे। एकीकरण के बाद निजाम को वही दर्जा प्रधान किया गया था, जो भारत के साथ विलय करने वाले अन्य

राजा को प्राप्त था। इस प्रकार आखिर हैदराबाद रियासत के प्रमुख शासक निजाम भारत सरकार के मिलिटरी के शरण मे आये और हैदराबाद रियसत को मुक्ती मिली। यह रियासत तीन राज्य के कुल सोलह जिलों पर राज करता था। तेलंगणा के ८ जिले, कर्नाटक के ३ जिले और मराठवाडा के ५ जिलों वाला प्रांत मिलाकर हैदराबाद रियासत बनाया गया था। हैदराबाद मुक्तिसंग्राम मे मराठवाडा के औरंगाबाद, उस्मानाबाद, बीड, परभणी और नांदेड इन जिलों का सहभाग था। यह हैदराबाद संस्थान अन्य संस्थानोमे सबसे बडा था। स्वतंत्र हिंदुस्तान के पेट मे अल्सर की तरह बन गई था। जब तक यह रीयासत भारत मे संम्मेलीत नही होती, तब तक भारत को प्रादेशिक अखंडता प्राप्त नही हो सकती थी। कोई भी राष्ट्र प्रादेशिक अखंडता के बिना सुखी नही हो सकता। हैदराबाद जो देश के बीचोबीच बडा संस्थान था यह भारत मे विलीन होना, देश के अस्तित्व का प्रश्न बन गया था। देश का विभाजन दुःखपूर्ण घटना थी। विभाजन के उपरांन्त भी हैदराबाद भारत के अस्तित्व के लिए धोका बन सकता था।

रियासत की जनता को इस बात की जानकारी नही थी की हातेली पर सर लेकर बलिदान के लिए उठे मुक्ती आंदोलन के इन कार्यकर्ताओ के सामने केवल एक जमीन के तुकडे का विलीनीकरण करना यह उद्देश नही था, बल्की संपूर्ण भारत की अखंडता टिकाने के लिए यह आंदोलन करना था। उस समय के हैदराबाद स्टेट की समस्या के हाल से भारत का भविष्य निर्माण होने वाला था। निजाम शासकी ओर से इत्तीहादुल मुस्लिम के नेत्रत्व मे कट्टर जातीवादी मुसलमानों का संघटन किया गया था। एवं उनकी एक शक्तिशाली रजाकार संघटना का निर्माण किया गया था। इन्ही रजाकारो के खिलाफ सर पर कफन बांधकर संघर्ष करना था। जब किसी को अपने जीवन की शाश्वती नही रहती तब उस रयान का आंदोलन पूर्ण रूप से अहिंसक नही रह सकता। जनता को प्रतिकार के लिये हातोमे शस्त्र लेना आवश्यक हो जाता था। इसीलिए यहा की जनता ने राज्य की सीमाओ पर सशस्त्र आंदोलन प्रारंभ कर दिया था। भारत में जन संघटन बढाने के लिए आर्य समाज, हिंदू महासभा, स्टेट काँग्रेस, विद्यार्थी आंदोलन, मजदूर संघटन और महिला संघटन आदि संघटना कार्य के लिए अलग अलग रूप में तय्यार हो गयी थी। इन्होने अपने कार्य की एक योजना बनाई जिसमें सभाये लेना, संम्मेलन आयोजित करना, संघटन कार्य आयोजित करना बडे पैमने पर सुरू हो गया। परिषदो के माध्यम से जनजागृती और जनसंगठण कार्य से प्रेरित होकरही जनता ने यह सशस्त्र विरोध जारी कर दिया। जैसे ही जनसंघटन, विरोध, प्रतिरोध बढने लगा वैसे ही निजाम शासक के रझाकारोने राज्यभर की जनता पर अत्याचार एवम हत्या का सत्र रियासत की हर दिशा मे शुरू कर दिया। लूटमार ,मारपीट करना यह तो आम बात होती थी। लोगो की भीड भाड जहा होती वहा पर हवा में गोली चलाकर दहशत करना, डर फैलाते रहना, घरों, दुकानोंमे आग लगाया जाना यह आम बात हो गयी, स्त्रियोंके सतीत्व को लुटा जाने लगा। उनके शरीरपरसे आभूषण उतारे जाने लगे। रजाकरों को नुकसान पोहोचणे वाला या रोकने वाला कोई नही था, पुलिस भी सहधर्मी थी। नगर नगर ग्राम -ग्राम कार्यकर्ताओ को धर पकड कर बंदी बनाते और उनका छल करते थे।

रियासत में सभी जगह जनता परेशान थी। रियासत के सभी सरहदोपर लढाऊ कॅम्प लगाये गये थे।मराठवाडा मे परभणी, बीड और उस्मानाबाद जिला की सीमा पर लोक संघटन से कॅम्प लगाकर रखे थे, ताकी रझाकार सीमा के अंदर प्रवेश ना करे। जन जागरण हेतू लोगो को एखट्टा कराना बहुत महत्वपूर्ण काम था। इस काम मे मराठवाडा के महिलाओ

का योगदान मौलिक रहा। इस मुक्ती संग्राम मे अनेक महिलाए स्वयं प्रेरणा से शामिल हुई थी। महिलाओ के सहभाग से ही यह संग्राम जनआंदोलन मे तबदील हो गया। साहस, त्याग,बलिदान एवं समर्पण से भरा यह सहभाग था। जिन्होने अपनी पारिवारिक भूमिका के साथ साथ राष्ट्रवादीप्रेम, मात्रभूमी के प्रति जागरुक गतिविधियों में हिस्सेदारी की। इन महिलाओं ने अपनी वीरता और नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए मुक्तिसंग्राम में पुरुषों के साथ साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। मराठवाडा मे महिलाओं को मा जिजाऊ से प्रेरणा मिली हुई है। और सावित्रीबाई फुले से समाजकार्य के लिए हम प्रेरित हुए है। कॉम्रेड आशाताई वाघमारेने गिरणी मजदूरों का नेतृत्व किया। तभी गिताबाई चारठाणकर अपने सहस से साथ मे जहर की पुढीयां लेकर सारे गुप्तचरों की जिम्मेदारी ली थी। डॉ. ताराबाई परांजपे, प्रमिला कुलकर्णी, प्रतिभा वैशंपायन, करुणा चौधरी, कावेरीबाई बोधनकर,(नांदेड) शांता कवठे यह वीरांगणा दगडाबाई शेळके, गोदावरीबाई टेके, तान्ह्याबाई हंगरगेकर, कृष्णाबाई रत्नाळीकर, शकुंतला साले, चंदाजरीवाले, राजकुमार काबरा, विमल मेलाकोटे, सुशीला दिवाण, शैलजा गोगटे, सिंधू पाठक या तारा लठ्ठा इस प्रकार की अनेक महिलाये इस संग्राम मे मातृभूमी के प्रति अपना कर्तव्य बनकर लढ रही है। इन महिलाओ के कार्य मे शामिल कार्य जिसमे जासूसी पत्र तयार करना, पत्र छापना, पत्र बाटना, उचित स्थान पर पत्र पोहोचाना, जासूसी करना,खबरे लाना, ले जाना, शस्त्र का व्यवहार करना, कैदियों के घर वालों की पूछताच करना, इतना ही नही तो (प्रौढ शिक्षण) शिक्षा का प्रसार कार्य करते रहना यह सब काम शामील होते थे। जब जब घर पर आपत्ती आती थी तब तब निडर होकर आपत्ती का सामना करते थे। कार्यकर्ताओंके भोजन आधी ची व्यवस्था करना, पैसा खडा करना, व्यायाम स्कूल चलाना,प्रशिक्षण केंद्र को चलाना आदि कर्तव्य भी यह महिलायें निभती थी। तिरंगा झेंडालेकर आगे आगे बढकर अपना नारीत्व जताती थी। हुतात्मा लक्ष्मीबाई भायेकरणे अपने पति को बचाते बचाते रझाकार के गोली की शिकार हो गई । यह बलिदान केवल पच्चीस साल की उमर मे उन्होंने दिया था। ऐसी कुर्बानी हम भारतवासी नही भूल सकते। आज आजादी के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर हम सभी बलिदानी वीरांगणा के कार्य को स्मरण करते है और उनके प्रति अभिमान व्यक्त करते है।

**संदर्भ ग्रंथ**

१. हैदराबाद मुक्ती संग्रामातील पूर्ण वेळ कार्यकर्ते. साखर मुद्रणालय प्रकाशन वर्ष २०१२
२. हैदराबाद विमा चीन आणि विसर्जन दप जोशी प्रकाश प्रकाशन वर्ष १९८५